

## भारत-जॉर्डन संबंध: एक रिथर साझेदारी को रणनीतिक गठबंधन में बदलना

**UPSC प्रासंगिकता: सामान्य अध्ययन प्र०प्त्र 2:**  
अंतर्राष्ट्रीय संबंध, पश्चिम एशिया, आतंकवाद का  
मुकाबला, बहुपक्षीय कूटनीति।

### चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिसंबर 2025 में जॉर्डन की पूर्ण द्विपक्षीय यात्रा की और किंग अब्दुल्ला द्वितीय के साथ व्यापक चर्चा की। यह उनकी जॉर्डन की पहली एकल यात्रा थी और राजनीतिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर हुई। यह यात्रा तंबे समय से लेते आ रहे सङ्कात को अविष्योन्मुखी रणनीतिक साझेदारी में बदलने के नए प्रयास का संकेत देती है।



### अवलोकन (Overview)

भारत की 2025 की जॉर्डन के साथ यह ऐतिहासिक भागीदारी, पारंपरिक रूप से रिथर संबंधों को भारत की पश्चिम एशिया नीति के एक रणनीतिक स्तंभ के रूप में पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है। इस यात्रा के दौरान 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार, डिजिटल भुगतान एकीकरण, और हरित ऊर्जा व जल सुरक्षा में सहयोग सहित महत्वाकांक्षी लक्ष्य घोषित किए गए। साथ ही, जॉर्डन की आर्थिक कमज़ोरियों और क्षेत्र की भू-राजनीतिक अस्थिरता से उत्पन्न बाधाओं को भी स्वीकार किया गया।

### यात्रा के प्रमुख परिणाम

#### 1. संस्थागत और नीतिगत परिणाम

पाँच समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए गए, जिनमें शामिल हैं:

- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा
- जल संसाधन प्रबंधन और विकास।
- पेट्रो-एलोरा ट्रिविनिंग समझौता (विरासत कूटनीति)
- सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (2025-2029)
- जनरेंरल्स-रेतर के डिजिटल समाधानों के माध्यम से डिजिटल परिवर्तन।

#### 2. आर्थिक और रणनीतिक प्रतिबद्धताएं

- व्यापार लक्ष्य: पांच वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार को 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाना।
- भारत ने एक प्रमुख उर्वरक आपूर्तिकर्ता (फॉर्सेट और पोटाश) के रूप में जॉर्डन के महत्व की पुष्टि की।
- भारत के UPI को जॉर्डन के डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र के साथ जोड़ने का प्रस्ताव।

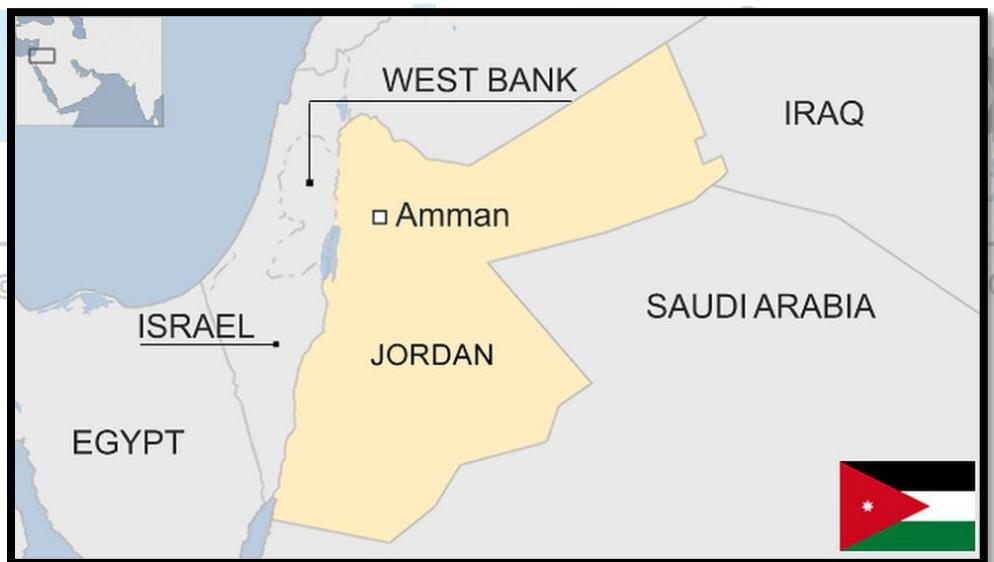
9235313184, 9235440806

### 3. सुरक्षा और क्षेत्रीय संरेखण

- सभी रूपों में आतंकवाद की कड़ी संयुक्त निंदा।
- पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और नागरिक सुरक्षा के प्रति साझा प्रतिबद्धता।

### भारत की पश्चिम एशिया नीति में जॉर्डन का राणीतिक महत्व

- भू-राजनीतिक सेतु राज्य (Bridge State):** जॉर्डन एक पश्चिम-समर्थक, उदार संवैधानिक राजतंत्र है जिसका इज़राइल के साथ शांति समझौता है। यह भारत को इज़राइल, अरब देशों और ईरान के साथ संबंधों को संतुलित करने में मदद करता है।
- क्षेत्रीय स्थिरता का आधार:** जॉर्डन बड़ी संख्या में सीरियाई और फिलिस्तीनी शरणार्थियों को आश्रय देता है, जो एक मानवीय स्थिरता के रूप में इसकी भूमिका को पुर्खता करता है। यरूशलैम में इस्लामी पवित्र स्थलों की इसकी संरक्षकता इसे कूटनीतिक प्रभाव प्रदान करती है।
- आतंकवाद विरोध पर समानता:** अकाबा प्रक्रिया (2015) में भागीदारी और रक्षा संयोग समझौते (2018) के माध्यम से दोनों देशों के बीच सैन्य विश्वास बढ़ रहा है।
- बहुपक्षीय और OIC प्रभाव:** इरालामिक संयोग संगठन (OIC) में जॉर्डन का प्रभाव भारत को कश्मीर सहित अन्य मुद्दों पर प्रतिकूल आख्यानों का मुकाबला करने में कूटनीतिक समर्थन प्रदान करता है।
- संपर्क और कॉरिडोर प्रासंगिकता:** जॉर्डन भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गतियारे (IMEC) में एक लॉजिस्टिक्स केंद्र के रूप में उभर रहा है। लाल सागर संकट के दौरान, सऊदी अरब-जॉर्डन के माध्यम से सड़क मार्ग का महत्व बढ़ गया।



### जॉर्डन: प्रारंभिक परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण तथ्य

- स्थान:** पश्चिम एशिया, सीमाएं सीरिया, इराक, सऊदी अरब, इज़राइल और वेस्ट बैंक से मिलती हैं।
- भूगोल:** 80% रेगिस्तान; उपजाऊ जॉर्डन घाटी; चट्टानी उच्च भूमि।
- जनसंख्या:** मुख्य रूप से अरब; लगभग एक-तिहाई फिलिस्तीनी मूल के।
- पहुँच:** लाल सागर पर स्थित अकाबा बंदरगाह।
- आधुनिक राज्य:** 1946 में स्वतंत्रता; इज़राइल के साथ वाडी अराबा शांति संधि (1994)।

## भारत-जॉर्डन संबंधों के मुख्य स्तंभ

- राजनीतिक और राजनयिक जुड़ाव:** 1950 से राजनयिक संबंध UNGA और COP जैसे मंचों पर नियमित उच्च-स्तरीय बातचीत।
- व्यापार और आर्थिक एकीकरण:** भारत जॉर्डन का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। ट्रिप्लीय व्यापार (FY 2023-24): 2.875 बिलियन अमेरिकी डॉलर। जॉर्डन इंडिया फर्टिलाइजर कंपनी (JIFCO) भारत की कृषि सुरक्षा सुनिश्चित करती है।
- रक्षा और सुरक्षा:** रक्षा समझौता ज्ञापन (2018) और विशेष बलों के बीच नियमित अभ्यास।
- विज्ञान, तकनीक और डिजिटल सहयोग:** अल-हुसैन टेक्निकल यूनिवर्सिटी में 'भारत-जॉर्डन आईटी उत्कृष्टता केंद्र' की स्थापना, जो परम शावक (PARAM Shavak) सुपरकंप्यूटर से सुरक्षित है।
- सांस्कृतिक संबंध:** जॉर्डन में रवारश्य सेवा और आईटी क्षेत्र में लगभग 17,500 भारतीय कार्यरत हैं। बॉलीवुड और योग के प्रति वहां गहरा आकर्षण है।

## साझेदारी में बाधा उत्पन्न करने वाली चुनौतियाँ

- आर्थिक सीमाएं:** व्यापार कुछ छीं वस्तुओं (उर्वरक) तक सीमित है। जॉर्डन में उच्च बेरोजगारी (21%) और सार्वजनिक ऋण (GDP का 90%) विस्तार की क्षमता को सीमित करता है।
- भू-राजनीतिक अस्थिरता:** जॉर्डन की नीतियां इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष से गहराई से जुड़ी हैं। क्षेत्रीय तनाव दीर्घकालिक आर्थिक योजनाओं को बाधित करते हैं।
- संपर्क की कमी (Connectivity Deficit):** सीधी उड़ानों का अभाव (केवल अम्मान-मुंबई) और खाड़ी टेशों की तुलना में कम मानवीय प्रवाह।



## आगे की राह: रणनीतिक साझेदारी को गहरा करना

- आर्थिक विविधीकरण:** एक रणनीतिक आर्थिक और तकनीकी संवाद स्थापित करना तथा व्यापार को केवल वस्तुओं से हटाकर स्टार्टअप और MSME तक ले जाना।
- डिजिटल और DPI कूटनीति:** UPI, डिजिटल रवारश्य और ई-गवर्नेंस में सहयोग बढ़ाना।
- हरित ऊर्जा और जल सुरक्षा:** सौर ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन और समुद्री जल को मीठा बनाने (Desalination) की तकनीक पर संयुक्त कार्य।
- क्षेत्रीय स्थिरता भूमिका:** जॉर्डन को मानवीय सहायता और संघर्ष-पश्चात पुनर्निर्माण के लिए एक आधार के रूप में उपयोग करना।
- सांस्कृतिक कूटनीति:** हवाई संपर्क (अम्मान-टिल्ली/चेन्नई) का विस्तार करना और पर्यटन व पुरातत्व में सहयोग को गहरा करना।

## निष्कर्ष

प्रधानमंत्री की 2025 की यात्रा भारत-जॉर्डन संबंधों में एक रणनीतिक मोड़ है। आर्थिक विविधीकरण, डिजिटल कूटनीति और सुरक्षा सहयोग को एकीकृत करके, यह साझेदारी प्रतीकात्मक सङ्घाव से आगे बढ़कर वास्तविक रणनीतिक परिणामों में बदलने के लिए तैयार है।

## UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रण

प्रण: "भारत-जॉर्डन संबंध भारत की संतुलित पश्चिम एशिया रणनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।" भारत के लिए जॉर्डन के रणनीतिक महत्व, प्रधानमंत्री की 2025 की यात्रा के प्रमुख परिणामों और इस साझेदारी को गढ़ा करने में आगे वाली प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा करें। ट्रिप्लीय संबंधों को मजबूत करने के लिए उपयुक्त उपायों का सुझाव दें। (250 शब्द)



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

